आंतरिक डिजाइन (Interior Design) की शक्ति @

"अरे, अरे मुझ पर नाराज़ मत हो। यह मेरी संकाय परिषद और कर्मचारी, वास्तुकार और इंटीरियर डिजाइनर हैं, जो इसके लिए जिम्मेदार हैं। ज़्यादा से ज़्यादा आप मुझे उनकी बात मानने के लिए दोष दे सकते हो" आईएमपी के निदेशक डॉ तुषार पटेल ने पांच संस्थानों मे अपने समकक्षों से कहा जिनमे से एक एमबीऐ प्रवेश में ओबीसी कोटा आरक्षण के अंतर्गत 54% सीट बढाने के कारण बहुत अधिक उद्वेलित थे।

आईएमपी भारत सरकार के उन छह प्रबंध संस्थानों में से एक था, जिन्हें जुलाई 2007 में कुल सीटों में 54% की वृद्धि करने के लिए 3 साल का समय दिया गया था। आईएमपी ने प्रथम वर्ष में ही सीटों की आवश्यक वृद्धि का 85% लक्ष्य पूरा कर लिया था, जबकि अन्य संस्थानों में 12-15% की वृद्धि हुई थी और अगले दो वर्षों में बाकी सीटें बढ़ानी थीं ।

डॉ पटेल ने कहा, "मार्च में संकाय परिषद ने एमबीऐ प्रवेश वृद्धि के मुद्दे पर चर्चा करने के लिए मुलाकात की थी। मैं ऐसी बैठक में भाग लेने के लिए भी अनिच्छुक था, लेकिन कुछ वरिष्ठ सदस्यों के अनुरोध पर, मैं ऐसा करने के लिए सहमत हो गया। हालांकि, मैंने दो चीजों को स्पष्ट कर दिया था। पहला, संकाय सदस्यों को कम से कम 3 पाठ्यक्रमों समतुल्य (equivalent) पढ़ाने के बाद दो अतिरिक्त पाठ्यक्रमों को पढ़ाने के लिए भुगतान करने के बोर्ड ऑफ़ गवर्नर्स के निर्णय को केवल तभी लागू किया जाएगा, जब एमबीऐ प्रवेश बढ़ाया जाए। अतिरिक्त भुगतान का मुद्दा बोर्ड की मंजूरी के लिए मेरे द्वारा शुरू किया गया था, क्योंकि एमबीऐ में ओबीसी कोटा से संबंधित प्रवेश में वृद्धि करने के लिए अध्यापकों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए संकाय सदस्यों की भारी कमी थी । दूसरे, प्रवेश वृद्धि के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे की व्यवस्था के लिए मुझे कम से कम 3-4 महीने का समय चाहिए । "बैठक के अंत में", उन्होंने कहा, "संकाय परिषद ने 60 छात्रों के एक और खंड (section) को बढ़ाने के लिए संकल्प किया। हमें अगले बोर्ड की बैठक में भी मंजूरी मिल गई। "

बाद में कुछ रोचक घटनाएं हुईं। पहला, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने 9 अप्रैल को ओबीसी कोटा आरक्षण मुद्दे को मंजूरी दी थी। लेकिन कलकत्ता हाईकोर्ट ने इसके कार्यान्वयन पर रोक लगा दी । निदेशकों ने एक दूसरे से बात की और यह निर्णय लिया गया कि चूँकि अन्य उम्मीदवारों के लिए प्रवेश में देरी हो रही है, इसलिए संस्थान पिछले वर्ष (पूर्व-ओबीसी कोटा वर्ष) की तरह ही प्रस्ताव भेज सकते हैं। "हमारे प्रवेश कमेटी ने तदनुसार 700 सामान्य श्रेणी के उम्मीदवारों को और इसी तरह अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति के छात्रों को लिए आमंत्रण पत्र भेजा। किन्तु मार्च 2008 के स्नातक बैच के छात्रों को उत्कृष्ट नौकरी पाने के कारण पिछले वर्ष की 140 स्वीकृतिओं के बजाय, सामान्य श्रेणी के छात्रों से 190 स्वीकृतियां प्राप्त हो गयीं "डॉ पटेल ने कहा। साथ ही 3 डॉक्टरेट छात्र थे और 2 एमबीए छात्र कार्यक्रम का पहला साल दोहरा रहे थे । 22% अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति के छात्र लेने थे । इस प्रकार, 235 सीटें सामान्य श्रेणी (अनारक्षित) और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति श्रेणी के लोगों से ही भर गयीं और किसीको अब अस्वीकार नहीं किया जा सकता था मई 2008 के अंत में, कलकत्ता उच्च न्यायालय ने भी ओबीसी कोटा आरक्षण को मंजूरी दे दी। अब हम एक अजीब स्थिति में फँस गए थे। 60 सीटों की बढ़ोतरी के लिए एक

DO NOT COPY

और अनुभाग (section) बढ़ाने के बाद भी ओबीसी उम्मीदवारों के लिए केवल 5 सीटें बची थीं। "हमने महसूस किया कि कोई भी इस तथ्य को हलके में नहीं लेगा, कि ओबीसी कोटा के नाम पर एक पूरे अनुभाग की वृद्धि हुई है, और ओबीसी के केवल 5 उम्मीदवारों को प्रवेश दिया गया है?" उन्होंने कहा।

इसलिए तत्काल एक संकाय परिषद की बैठक को इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए बुलाया गया । प्रवेश के हर पहलुओं (अनुभागों की संख्या, हर अनुभाग में सीटों की संख्या इत्यादि) पर विचार विमर्श हुआ और किसी तरह 28 अतिरिक्त सीटों को बढ़ाने का निर्णय लिया गया, जिससे ओबीसी उम्मीदवारों को कम से कम 33 सीटें मिल सके । एक जरूरी बोर्ड की बैठक भी बुलाई गई और 268 सीटों के लिए स्वीकृति ली गई। इस प्रकार 60 के बजाये 88 सीटें बढ़ाने का निर्णय लिया गया।

बोर्ड द्वारा उपरोक्त अनुमोदन के बाद किन्ही अज्ञात कारणों के कारण, अन्य संस्थानों ने प्रतीक्षा सूची से दाखिला जारी किया (ऐसा अनुभव पहली बार हुआ था)। लगभग 48 सामान्य उम्मीदवारों ने वहां जाने के लिए प्रवेश वापस ले लिया। आईएमपी को पूरी ओबीसी कोटा सूची का प्रयोग करना पड़ा। दरअसल, उसने 70 ओबीसी उम्मीदवारों को प्रवेश दिया और इस प्रकार 27% ओबीसी आरक्षण कोटे के लक्ष्य का 85% पहले वर्ष में ही पूरा कर लिया गया। कुल सीटों की 85% की वृद्धि के कारण, आईएमपी को मंत्रालय से आरक्षण के अंतर्गत अनुदान का लगभग 85% पहले वर्ष ही प्राप्त होने की आशा थी, जबकि अन्य संस्थानों को सीटों की बढ़ोतरी के अनुपात में, अर्थात लगभग 10-15%।

"आपने अवश्य किसी जादू की छड़ी का उपयोग किया होगा" एक निदेशक बोले "आप आवश्यक वृद्धि का 85% ऐसे कैसे समायोजित कर सकते हैं, जबकि आप दावा करते हैं कि आपके संस्थान में अधिकतम बाधाएं हैं और विस्तार करने के लिए अधिक समय, प्रयास और धन की आवश्यकता है?"

"कोई जादू की नहीं , बल्कि प्रबंधकीय छड़ी थी, थोड़ी दूरदर्शिता, थोड़ा नवाचार (innovation), समाज के लिए थोड़ी चिंता और थोड़ी किस्मत, ने यह सब किया " डॉ पटेल ने मुस्कुरा कर मन ही मन में कहा।

कहानी लेखक के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए डॉ। पटेल ने कहा। " फरवरी 2004 जब मैं यहां आया था, तो संस्थान 2002 शिक्षण सत्र में 60 छात्रों के प्रवेश (1 अनुभाग में) से 2003शिक्षण सत्र में 120 छात्रों (2 अनुभागों में) छात्रों का प्रवेश बढ़ चुका था जिसके के लिए मंत्रालय से मांग की गई थी। लेकिन दुर्भाग्य से दूसरे चरण के लिए अपेक्षित निर्माण में काफी देरी हुई थी। 120 छात्रों के लिए आवश्यक दूसरा कक्षा परिसर (सीआरसी II) केवल आधा बना था। एक छात्रावास विवाहित विद्यार्थियों के लिए बन रहा था । लेकिन चूँकि कोई विवाहित छात्र नहीं था, इसलिए एक दो आवासों का कभी-कभी संस्थान के अतिथि अध्यापकों के लिए उपयोग कर लिया जाता था। हालांकि अधिकांश अतिथि शिक्षकों के रहने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। एक अतिथि गृह और दूसरा विवाहित छात्र छात्रावास भी बन रहे थे। संस्थान धन के लिए पूरी तरह से सरकार पर निर्भर था, और धन नहीं आया था क्योंकि मंत्रालय और संस्थानों के बीच गतिरोध था। मैंने वास्तुकारों (आर्किटेक्टों) से व्याख्यान कक्ष संकुल II (सीआरसी II) के 36 सीटों वाले व्याख्यान कक्षों को 60 सीटों वाले और 60 सीटों वाले व्याख्यान कक्षों को 80-90 सीटरों में बदलने के लिए

DO NOT COPY

अनुरोध किया। उन्होंने फिर से काम किया और 60 और 80 सीटों वाले व्याख्यान कक्षों की योजना बनाई। इससे हमें तमाम कठिनाइओं के बावजूद तेजी से बढ़ने में मदद मिली और मार्च 2005 में जब १२० छात्रों का पहला बैच पास हो कर निकल रहा था तभी जुलाई में 180 छात्रों का पहला बैच प्रवेश कर रहा था । "

मार्च 2004 में छात्रों के लिए अतिरिक्त, अस्थायी अध्ययन कक्ष व्यवस्था बनाने के लिए बोर्ड द्वारा निर्धारित/ अनुमोदित धन अध्ययन कक्ष संकुल ॥ (class room complex ॥) को जल्दी पूरा करके (उसके बनने की आशा जनवरी 2005 थी, लेकिन जुलाई 2004 तक ही तैयार कर लिया गया) बचा लिया गया । अध्ययन कक्ष संकुल ।(class room complex ।) मैं वहां पहले से ही 60- 60 सीटों वाले दो कमरे और 36- 36 वाले दो कमरे थे। , कुल 120 छात्रों वाले बैच के लिए शुरूआती योजनाओं 60 सीटों वाले कक्षों की संख्या 4 के बजाय 60 से अधिक सीटों वाले कक्षों की संख्या अब 6 थी। दो कक्षा के कमरे वास्तव में 80 छात्रों को समायोजित कर सकते थे । पहले साल में 280 विद्यार्थियों (2 * 80 + 2 * 60) को समायोजित करने में यह आसान था, साथ में दो 60 सीटों वाले और दो 36 छात्र द्वितीय वर्ष के छात्रों के लिए उपलब्ध वर्ग के कमरे थे। दोपहर में लगभग सभी कक्षा के कमरे दूसरे वर्ष के छात्रों के लिए उपलब्ध थे। विशेषज्ञ संकाय सदस्यों की एक बड़ी संख्या बाहर से आ रहे थे । उड़ानें केवल दोपहर में ही पहुंच गईं द्वितीय वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के लिए वर्ग के कमरों की उपलब्धता, इस प्रकार, संकाय के बाहर विशेषज्ञों की सुविधा के साथ अच्छी तरह से जुड़ी हुई है। यह एक शर्मनाक स्थिति पर काबू पाने में मदद की, जो उत्पन्न हो सकती थी , यदि ओबीसी कोटा विद्यार्थियों के लिए पहले बढ़ाई गयी सीटें कम हो जाती ।

द्वितीय वर्ष (सन 2004) में 120 छात्रों के लिए अतिरिक्त, अस्थायी अध्ययन कक्ष व्यवस्था बनाने के लिए बोर्ड द्वारा निर्धारित/ अनुमोदित धन, दो विवाहित छात्रावासों हॉस्टल और गेस्ट हाउस को प्रस्तुत (furnish) करने के लिए इस्तेमाल किया गया । दो इंटीरियर डिजाइनर नियुक्त किए गए, एक गेस्टहाउस के लिए और दूसरा दो विवाहित छात्रावासों को 2 अतिरिक्त गेस्ट हाउस में परिवर्तित करने के लिए। उन्होंने उन्हें 2 शानदार द्वैअधिभोग (double occupancy) गेस्ट हाउस में परिवर्तित कर दिया, जिससे सभी 3 अतिथि घरों में 48 बिस्तरों उपलब्ध हो गए । डिजाइन इतना आकर्षक था कि न केवल कम लागत वाले फैकल्टी विकास कार्यक्रमों के प्रतिभागियों ने इसे पसंद किया, बल्कि नौकरी देने के लिए आने वाले आगंतुक भी शहर में होटल की तुलना में इन अतिथि घरों में रहने के लिए अनुरोध करने लगे ।

"जब हमने एमबीए में प्रवेश 120 छात्रों से 180 छात्रों तक बढ़ाया तो हमें दो और छात्रावासों की आवश्यकता हुई। हमने एक छात्रावास में 60 एकल अधिभोग (single occupancy) के कमरे और दूसरे में 42 द्वैअधिभोग (double occupancy) आकार में थोड़ा बड़ा कमरे (एक संलग्न शौचालय के साथ) बनाने के बारे में सोचा, 2 व्यक्तियों को समायोजित करने के लिए। यह एक प्रयोग था। हमने देखा था कि सभी एमबीए छात्रों के छात्रावासों का उपयोग वर्ष में केवल नौ महीने ही होता है और वे 3 महीने के लिए खाली रहते हैं। हमने 42 कमरों वाले छात्रावास को अतिथि गृह की तरह प्रस्तुत करने के बारे में सोचा, ताकि उन्हें गर्मी की छुट्टिओं में कम लागत (cost) वाले संकाय विकास कार्यक्रम (faculty development programmes) के संचालन के लिए भी उपयोग किया जा सके। इस तरह प्रस्तुत करना इतना आकर्षक था कि बोर्ड ने अगले दो छात्रावासों (64 और 48 कमरों वाले) को भी इसी तरीके से निर्माण करने की अनुमति

DO NOT COPY

दी । एमबीए छात्रों को यह इतने पसंद आये कि उन्होंने संस्थान से अनुरोध किया कि उन्हें एकल अधिभोग के बजाय द्वैअधिभोग (double occupancy) में रहने की अनुमति दी जाए। बस इंटीरियर डिज़ाइन के माध्यम से, 2009 तक, हमें 212 (2 * 106) प्रतिभागियों को गर्मियों की छुट्टिओं में एफडीपी / एमडीपी के लिए अतिरिक्त आवास मिल गया। सिविल काम के लिए कोई अधिक अतिरिक्तअधिक लागत नहीं थी (केवल प्रस्तुत लागत अतिरिक्त थी), और एमबीए छात्रों के अनुरोध पर छात्रावासों के अच्छा अधिभोग दोहन (better utilization) करके, एमबीए छात्रों के लिए 106 अतिरिक्त शैयाएँ उपलब्ध हो गयीं । इसलिए, एमबीए का प्रवेश बढ़ाने के लिए 85 छात्रों को समायोजित किया जा सका है, ओबीसी कोटा के अंतर्गत प्रवेश बढ़ा, नियमित आधारभूत बुनियादी सुविधाओं के बनने से पहले ही।

"मुझे इंटीरियर डिजाइन की शक्ति का एहसास कभी नहीं हुआ था, न ही इस तथ्य का कि बाधाएं और पर्यावरण संबंधी खतरे एक अप्रत्शयाशित अवसर भी दे सकते हैं। इससे हमें तेजी से बढ़ने में मदद मिली । इसके अलावा, जब हमने विवाहित विद्यार्थियों के छात्रावास को आकर्षक अतिथि घर में परिवर्तित किया, हमने प्रत्येक वर्ष लगभग 30 लाख रुपयों की बचत की जो अतिथि संकायों के होटलों में निवास लिए और उनके परिवहन पर खर्च होता था। एक वर्ष की बचत उन्हें प्रस्तुत करने की (furnishing) लागत के बराबर थी । इससे हमें एमडीपी / एफडीपी को नियमित आधारभूत संरचना के बिना भी संचालन में मदद मिली। तीन वर्षों में, हमने एफडीपी में नेतृत्व की स्थिति हासिल की। लेकिन एमबीए छात्रावासों को आकर्षक कार्यकारी छात्रावास (executive hostel) बनाने से हमें नयी / अतिरिक्त धन की भी प्राप्ति हुई ।

3 लाख की फीस के साथ 85 छात्रों से अतिरिक्त 250 लाख रुपये (जो कि अगले साल 500 लाख रुपये तक हो जायेंगे) मिलेगा जबकि वृद्धि की लागत केवल 100 लाख रुपये थी। इसके अलावा संकाय द्वारा गर्मी की छुट्टिओं में जितने संभव हो उतने एमडीपी / एफडीपी / सम्मेलन आयोजित करने के लिए अतिरिक्त आवास का उपलब्ध हो गए थे । और सब से ऊपर हम ओबीसी कोटा के अनुसार आवश्यक एमबीए सीटों में वृद्धि को पार करने में दूसरे वर्ष सक्षम थे, यहाँ की भौगोलिक स्थिति में सामान्य रूप में संभवतः 7-8 साल लग जाते । "

कहानी लेखक थोड़े चकित थे । "आईएमपी की एमबीए प्रवेश वृद्धि दर कितनी थी? प्रवेश में वृद्धि कैसे हुई? क्या विकास सिर्फ केवल व्यक्ति विशेष की पसंद नापसंद पर निर्भर है ? क्या कोई सचेत रणनीति थी? इस वृद्धि के कारण संस्थान को मिलने वाले लाभ क्या थे? अभिनव सोच / आंतरिक डिजाइन के कारण कितना लाभ होता है? क्या इन सबका केवल धन के रूप में मूल्यांकन किया जा सकता है? डॉ पटेल द्वारा प्रयुक्त तथाकथित प्रबंधकीय छड़ी क्या थी? "

DO NOT COPY